संग्राम

सदाचारी जीवन का सबसे बड़ा भारी धर्म यह है कि मनुष्य अपने आपको जाने। सच्ची तपस्या इन्द्रियों का संयम और दंभ है। यह जभी संभव हो सकता है जब मनुष्य को अपने दुर्बल अंश का ज्ञान हो। हमारे अंदर देवासुर संग्राम हो रहा है। असुर प्रत्येक की अवस्था में विशेष दुर्बल अंश को ढूँढते हैं और प्रहार करते हैं। एक मनुष्य की अवस्था में यह अंश काम दूसरे की अवस्था में क्रोध तीसरे की अवस्था में कोई और विषय होता है। जो मनुष्य अपने आप को नहीं जानता वह अपने दुर्बल अंश को भी नहीं जानता। अतएव इन्द्रियों को वश में रखने के अयोग्य है।

धर्म को धर्म के लिये पालन करना चाहिये। सुखों का प्राप्त करना जीवन का उद्येश्य नहीं है। धर्म का तत्व यह है कि मनुष्य अपने आप को स्वतंत्र रखे। जीवन एक संग्राम है। पग-पग पर आसुरी शक्तियाँ दैवीय शक्तियों से युद्ध करती हैं। इस संग्राम में आसुरी भाव कभी आपत्तियों का रूप धारण करते हैं, कभी विषयों का आदर्श आचार इन शब्दों में आ जाता है।

बोलो प्रेम से सच्चिदानंद सनातन ब्रह्म की जय।